

## क्या वीडियो गेम्स संज्ञान क्षमता बढ़ाते हैं?

कई अध्ययनों के आधार पर दावे किए जाते रहे हैं कि तेज़ रफ्तार वाले वीडियो गेम्स खेलने से बच्चों की संज्ञान क्षमता में वृद्धि होती है। कारण यह बताया जाता है कि ऐसे तेज़ रफ्तार वाले वीडियो गेम्स खेलते समय व्यक्ति को दिमाग एकाग्र करना पड़ता है, दृष्टि से प्राप्त सूचनाओं

पर फौरन प्रतिक्रिया देनी पड़ती है, जिनसे उसका दिमाग न सिर्फ सक्रिय होता है बल्कि उसमें एकाग्रता भी पैदा होती है। मगर हाल ही में प्रकाशित एक समीक्षा पत्र में स्पष्ट किया गया है कि ऐसे तमाम अध्ययनों में जांच-पड़ताल करने की विधि में त्रुटियां थीं और इनके निष्कर्ष संदिग्ध हैं।

इस समीक्षा के लेखक फ्लोरिडा विश्वविद्यालय के वाल्टर बूट व उनके साथी हैं। उनका कहना है कि वीडियो गेम्स के प्रभाव को आंकने वाले लगभग सारे अध्ययन पद्धति में किसी न किसी खामी से ग्रस्त हैं। जैसे अधिकांश अध्ययनों में संज्ञान क्षमता की तुलना के लिए जो दो समूह लिए गए हैं उनमें काफी अन्य अंतर हैं। कई अध्ययनों में वीडियो गेम्स में महारत रखने वाले लोगों की तुलना नौसिखियों से की गई। जब आप महारथी लोगों को अध्ययन में शामिल करेंगे तो ज़ाहिर है वे पूरी कोशिश करेंगे कि अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन ही दें।

बूट के मुताबिक इन अध्ययनों की एक और खामी यह है कि इनमें शोधकर्ताओं और अध्ययन में शामिल किए गए



वालंटीयर्स दोनों को मालूम रहता था कि किस चीज़ का अध्ययन किया जा रहा है और कौन-सा वालंटीयर किस समूह का है। इसका असर उनके प्रदर्शन पर भी होगा और शोधकर्ताओं की अपेक्षाओं पर भी।

कुछ अध्ययन ऐसे भी थे

जिनमें एक समूह को तेज़ रफ्तार का खेल खेलने को दिया गया और दूसरे समूह को धीमी गति का कोई कार्य दिया गया। बाद में इनकी संज्ञान क्षमता की तुलना की गई। मगर इस तरह के अध्ययन में दिक्कत यह है कि वालंटीयर्स को मालूम है कि उनके प्रदर्शन में किस तरह की वृद्धि की उम्मीद की जा रही है। इसका असर परिणामों पर पड़े बगैर नहीं रहता। और यदि संज्ञान का परीक्षण किसी एक खेल से ज़्यादा मेल खाता हुआ है, तो परिणाम और भी गड़बड़ हो जाएंगे।

बूट व उनके साथियों का कहना है कि वीडियो गेम्स सम्बंधी एक भी अध्ययन ऐसा नहीं था जिसमें शोध-पद्धति सम्बंधी सारी खामियों को दूर कर दिया गया हो। इस आधार पर वे कहते हैं कि संभव है कि वीडियो गेम्स का संज्ञान क्षमता पर असर होता हो, मगर अध्ययनों से इसके कोई पुख्ता या अकाट्य प्रमाण नहीं मिले हैं। उनका आग्रह है कि आगे किए जाने वाले अध्ययनों में प्रायोगिक डिज़ाइन ज़्यादा सावधानीपूर्वक तैयार की जानी चाहिए (**स्रोत फीचर्स**)